Rohtas Mahila College, SASARAM
Study Material for B.A. II
Sanskrit

Dr. Savitri Singh
Associate Professor
Deptt. of Sanskrit
R.M.C. SASARAM

Date
03.06.2020

शुकनासोपदेश के आधार पर गुरुपदेश की महत्ता

(शेष भाग)

राजाओं के लिए गुरु के उपदेश का महत्व अत्यधिक होता है क्योंकि उन्हें उपदेश देने की हिम्मत बहुत कम लोगों में होती है। ऐसे में उनके पथविचलित होने के अवसर अत्यधिक होते हैं। राजा जिन अनुचरों सेवकों, चाटुकारों से घिरा रहता है वे सर्वदा अपने स्वार्थ सिद्धि में उनकी हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं। महाकवि भारवि ने भी इस सन्दर्भ में "हितं हि मनोहारि च दुर्लभं वचः" कहा है। इसलिए हे तात चन्द्रापीड आपके लिए गुरु उपदेश की महत्ता अत्यधिक है।

इस क्रम में बाणभट्ट कहते हैं कि

उद्दामदर्पश्वयथुस्थगितश्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति शृण्वन्तोऽपि च गजनिमीलितेनावधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्।

तीव्र अभिमान के कारण शोथ से बन्द हुए कर्णछिद्रों वाले राजा उपदेश दिये जाने पर सुनते ही नहीं हैं और सुनकर भी 'गज-निमीलन' के समान उपदेश देने वाले गुरुजनों को वह खेद ही पहुँचाते हैं।

इस प्रकार बाणभट्ट कृत कादम्बरी के शुकनासोपदेश नामक प्रख्यात अंश में कवि ने युवावस्था का, उसमें युवराज एवं राजा के मनःस्थिति का सहज सुन्दर अत्यन्त सजीव चित्रण करते हुए उसके अनुकूल गुरुपदेश की आवश्यकता का वर्णन किया है। राजा हर्षवर्धन के समकालीन होने के बावजूद आज भी उनका शुकनासोपदेश में अंकित गुरुपदेश लाभकारी है। शायद सच ही कहा गया है कि कवि की रचनाएँ और कालातीत होते हैं जितने वे उस काल में प्रासंगिक थे उतने ही आज भी प्रासंगिक हैं।

End

Study Material For B.A. Part II
SANSKRIT

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit.
R.M.C. SASARAM

Date: 02.06.2020

"शुकनासोपदेश के आधार पर गुरुउपदेश का महत्व"
(शेष भाग)

गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानं, अनुपजातपलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरुकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः।

जिस प्रकार जल से धोने से शरीर के बाह्य मल दूर हो जाते हैं उसी प्रकार जल से धोये बिना ही गुरुपदेश से आभ्यन्तर मल दूर हो जाते हैं। बुढ़ापा आने पर बाल सफेद पड़ जाते हैं किन्तु पलितादि विरूपता के बिना ही गुरुपदेश से परिपक्वता (ज्ञान की बुढ़ापा) आ जाती है। सुवर्ण से बिना बने ही गुरुजनोपदेश कानों के उत्तम आभूषण बन जाते हैं। ज्योति के समाप्त हो जानेपर भी उससे ज्ञान का आलोक प्राप्त होता रहता है। अत्यधिक जागने से सन्तापादि उद्वेग हो जाते हैं। पर गुरुपदेश से संतापादि उद्वेग के बिना हीं जागृति (चैतन्यता) बनी रहती है।

राजाओं के लिए गुरुजनों का उपदेश विशेष उपयोगी होता है, क्योंकि राजाओं को उपदेश देने वाले विरले ही होते हैं।

जिस प्रकार प्रतिध्वनि मूलध्वनि को ही दोहराती है उसी प्रकार लोग भय से राजा वचनों को ही अनुगमन करते हैं।

विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।

शेष अगले अंक में